License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

जकर्याह 1:1–8:23

परमेश्वर ने जकर्याह से बात करके उनको कुछ संदेश दिए। उन्होंने जकर्याह को अन्य संदेश दर्शनों के माध्यम से दिए। जकर्याह ने ये संदेश तब साझा किए जब यहूदा के लोग मन्दिर का पुनर्निर्माण कर रहे थे। इस कहानी को एज्रा के अध्याय 5 और 6 में दर्ज किया गया है।

संदेशों के दो मुख्य बिंदु थे। पहला मुख्य बिंदु सीनै पर्वत की वाचा के बारे में था। जकर्याह के समय के लोगों को वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहना आवश्यक था। उनके पूर्वजों ने ऐसा नहीं किया था। उन्होंने केवल परमेश्वर की आराधना नहीं की थी। उन्होंने दूसरों के साथ वैसा व्यवहार नहीं किया था जैसा परमेश्वर ने उन्हें मूसा की व्यवस्था में सिखाया था। उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनी थी जिन्होंने उन्हें बुरे कामों को छोड़ने की चेतावनी दी थी। उन्होंने अपने पाप से मुंह नहीं मोड़ा और पश्चाताप नहीं किया।

इसीलिए परमेश्वर उत्तरी राज्य और दक्षिणी राज्य के विरुद्ध न्याय ले कर आए। अश्शूर के शासन ने इस्राएल के उत्तरी राज्य पर नियंत्रण कर लिया था। बाबेल के शासन ने यहूदा के दक्षिणी राज्य पर नियंत्रण कर लिया था। मन्दिर नष्ट कर दिया गया था। परमेश्वर के लोगों में से कई लोगों को अपनी भूमि छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था। वे अन्य राष्ट्रों के बीच तितर-बितर हुए थे और बँधुवाई में रहते थे।

बहुत से परमेश्वर के लोगों ने समझा कि उनके खिलाफ परमेश्वर का न्याय सही और उचित था। लोगों ने दिखाया कि वे परमेश्वर के न्याय के बारे में कितने दुखी थे। उन्होंने इसे शोक मनाकर और कुछ समय के लिए भोजन न करके दिखाया। जकर्याह ने समझाया कि परमेश्वर चाहते थे कि वे अपने दुख को कैसे दिखाएं। यह उपवास के द्वारा नहीं था। यह लोगों के साथ न्यायपूर्वक व्यवहार करके था। यह वही संदेश था जो यशायाह अध्याय 58 में उपवास के बारे में दर्ज है। परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था में लोगों के साथ न्यायपूर्वक व्यवहार करने का तरीका समझाया था। बँधुवाई के बाद भी परमेश्वर के लोगों को उन व्यवस्थाओं का पालन करना आवश्यक था।

जकर्याह 9:1–14:21

इन अध्यायों में न्याय के संदेश और आशा के संदेश शामिल हैं। कई तरीकों से ये अन्य भविष्यद्वाणी की पुस्तकों में दर्ज संदेशों के समान हैं।

यह न्याय यहूदा की भूमि के चारों ओर की जातियों के विरुद्ध था। परमेश्वर ने वादा किया कि वे उन जातियों को नष्ट कर देंगे जिन्होंने उनके लोगों पर आक्रमण किया था। इसमें वे जातियाँ शामिल थीं जिन्होंने याकूब के परिवार की वंशावली के साथ बुरा व्यवहार किया था। इसमें उन सभी लोगों के समूह भी शामिल थे जो घमंडी थे और जिन्होंने परमेश्वर का आदर नहीं किया। परमेश्वर ने वादा किया कि वे उन्हें प्रभु के दिन नाश कर देंगे। इसे अंतकालीन लेखन का उपयोग करके वर्णित किया गया था।

यह न्याय परमेश्वर के लोगों के कई अगुवों के विरुद्ध भी था। इन अगुवों ने शासकों के लिए परमेश्वर द्वारा दिए गए उदहारण का अनुसरण नहीं किया। परमेश्वर ने उनकी तुलना एक मूर्ख चरवाहे से की। उनके खिलाफ परमेश्वर का न्याय भयानक होगा।

आशा के संदेश उस समय के बारे में थे जब परमेश्वर पूरी तरह से राजा के रूप में शासन करेंगे। कुछ लोग न्याय के समय के बाद जीवित रहेंगे। वे वही हैं जो यह पहचानते हैं कि परमेश्वर ही एकमात्र सच्चे परमेश्वर हैं। वे केवल परमेश्वर की ही आराधना करेंगे और उनकी ही आज्ञापालन करेंगे। इसमें याकूब के परिवार की वंशावली के लोग भी शामिल हैं। इसमें सभी राष्ट्रों के लोग भी शामिल हैं। वे सभी परमेश्वर के लोग माने जायेंगे। परमेश्वर वह चरवाहा होंगे जो अपने लोगों की देखभाल करेंगे। परमेश्वर सभी प्रकार के युद्ध को रोक देंगे और पृथ्वी पर हर जगह शांति होगी।

यरूशलेम से जीवनदायी जल बह निकलेगा। इसे जीवन का जल या जीवित जल भी कहा गया था। यहेजकेल ने भी यरूशलेम से बहने वाले जल के बारे में कहा है (यहेजकेल 47:1–12)। इन संदेशों में यरूशलेम का शहर उस नए यरूशलेम के समान था जिसका वर्णन प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 में किया गया है।

कई वर्षों बाद, ये आशा के संदेश यीशु के अनुयायियों के लिए सहायक बने। इन संदेशों ने उन्हें यीशु के जीवन और कार्य को समझने में सहायता की थी। नए नियम के लेखकों ने इन संदेशों को यीशु के बारे में भविष्यद्वाणियों के रूप में समझा। यह उस राजा के लिए था जो गधे पर सवार था। यह उस विश्वासयोग्य चरवाहे के लिए था जिसे परमेश्वर के लोगों ने मार डाला था। यह उनके लिए था जिन्हें उन्होंने भेदा और जिनके लिए शोक मनाया था। यह उस स्रोत के लिए था जिन्होंने उनके पापों को धो डाला था।